ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी की पारिवारिक स्थिति

जोगिन्द्र

M.A., NET & JRF (Hindi)

Research Scholar, MDU, Rohtak(HR)

शोधालेख सारः वस्तुतः नारी सभ्य समाज का एवं परिवार रूपी इकाई का महत्वपूर्ण अंग है और भारतीय संस्कृति में परिवार का बहुत महत्व है। परिवार के बिना संस्कार नहीं पनपते। परिवार से व्यक्ति को संरक्षण प्राप्त होता है। परिवार से जातीय जीवन का विकास होता है। परिवार मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण के साथ–साथ उसे सामाजिक प्राणी बनाता है और संस्कारी भी। परिवार ही वह संस्था है, जो मनुष्य में संस्कार व सामाजिक रूपी बीज डालकर पोषित करता है और उसे एक संस्कारयुक्त सामाजिक प्राणी बनाता है। व्यक्तित्व निर्माण में परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार से ही व्यक्ति नैतिकता तथा अनैतिकता के गुण ग्रहण करता है। परिवार नीति और नैतिकता का आधार होता है। परिवार एक भावात्मक इकाई के साथ–साथ भविष्य निर्माता इकाई भी है। परिवार से ही व्यक्तित्व का निर्माण तथा पतन होता है। वासुदेव शरण अग्रवाल के मतानुसार – ''स्त्री–पुरुष दोनों परिवार के मूल हैं। नदी के तटों की भांति वह भी युक्त हैं। दोनों के बीच जीवन की धारा प्रवाहित होती है। वे दोनों दो होते हुए भी एक हैं।''[1] एक परिवार के निर्माण में स्त्री–पुरुष दोनों की अहम भूमिका होती है। इनमें से किसी एक के बिना ही परिवार अधूरा माना जाता है। यह दोनों मिलकर ही परिवार का निर्माण करते हैं। दोनों में से कोई एक नहीं है तो परिवार बिखर जाता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी की पारिवारिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्दः कथा साहित्य, परिवार, नारी, सामाजिक प्राणी, व्यक्तित्व, शिक्षित, दोयम, कामकाजी।

भूमिकाः हम इस सत्य को नहीं नकार सकते की आधुनिक युग में नारी की स्थिति में पारिवारिक दृष्टि से काफी परिवर्तन आया है तथा अब वह घर की चारदीवारी में कैद में होकर कामकाजी महिला बन चुकी है। अतः इस बात की महती आवश्यकता है की नारी की बदलती भूमिका को हम स्वीकार करें इसी पर समाज का विकास निर्भर करेगा। आज के युग में शिक्षित वर्ग में बढ़ोतरी हुई है, उसके साथ–साथ एकल परिवारों में भी बढ़ोतरी हुई है। एकल परिवार का जहाँ फायदा है, दूसरी तरफ उसका नुकसान भी है। एकल परिवार में जहाँ गैर कामकाजी महिलाएं होती हैं, उनको तो इतनी मुसीबतों का सामना नहीं करना पड़ता है, लेकिन जो कामकाजी

1 डॉ० भारती शेल्के, साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार, पृष्ठ 14

महिलाएं हैं, उनको ज्यादा परेशानी होती है, क्योंकि उनको घर भी संभालना पड़ता है और बच्चे भी संभालने तथा अपना काम भी संभालना होता है। ''उसने आंखें खोली। अगल–बगल काम ही काम था बे मजा कामों का एक बेढंगा अंबार। उसका मन हुआ अपनी चप्पलें पहन भाग जाए इस रौंदे हुए बिस्तर और भिनके हुए कमरे से कहीं दूर।''[2] एकल परिवार में एक कामकाजी नारी का जीवन बहुत ही व्यस्त हो जाता है। एक अकेली औरत घर संभाले या काम। उसे दोनों के बीच सामंजस्य करके आगे बढ़ना होता है। इस भाग दौड़ में वह अकेली न तो बच्चों को अच्छी प्रकार से संभाल सकती है और न ही खुद का अच्छी तरह से ख्याल रख सकती है। उच्च वर्ग की औरतों को तो इतनी दिक्कत नहीं आती, क्योंकि उनके पास तो काम करने के लिए नौकर होते हैं। ज्यादा दिक्कत निम्न वर्ग एवं मध्यम वर्ग की औरतों को आती है। क्योंकि उनके लिए तो बाहर जाकर काम करना जरूरी होता है। एकल परिवारों में पति–पत्नी के बीच झगड़े होने की ज्यादा संभावना होती है, क्योंकि वह दोनों ही अपने आप को श्रेष्ठ मानते हैं और अपनी–अपनी बातों पर अड़े रहते हैं। उनको कोई समझाने वाला अन्य सदस्य नहीं होता। यदि कोई बुजुर्ग उनके साथ है तो उन्हें शांत कर सकता है और उनका झगड़ा कम हो सकता है।

ममता कालिया एक ऐसी कथाकार हैं जिनकी प्रतिभा का लोहा सभी साहित्यकार मानते हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में भारतीय संदर्भ में परिवार में स्त्री की दोयम दर्जे की स्थिति को बेहद ही संवेदनशील ढंग से चित्रित किया है। ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में दर्शाया है कि दोयम दर्जे की पुरानी होने के कारण परिवार और समाज में स्त्रियां प्रायः शोषित होती रही हैं। नारी समाज में इसका उदाहरण है, समाज में नारियों की पुरुषों पर निर्भरता तथा उनकी पराधीनता का कारण उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति ही है। इस समाज में चाहे संयुक्त परिवार हो या फिर एकल परिवार पुरुष सदा ही स्त्री को संपत्ति समझता रहा है। एक नारी के देह और मन पर पुरुष का अबाध अधिकार रहा है, वह अपनी इच्छानुसार उस पर नियंत्रण करना चाहता है। वस्तुतः हमारे समाज का मूल ढांचा ही इस प्रकार का है कि नारी का शोषण हर जगह होता है। परिवार से बाहर प्रत्यक्ष रुप में तो परिवार में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में होता है। ज्यादातर नारियाँ परिवार के भीतर बाहर सुरक्षित होकर भी अपने आप को आहत और अपमानित महसूस करती हैं या की जाती रही हैं। पुरुष वर्ग उसके सामने आदर्श नारी का चरित्र रखकर या फिर कोई अन्य ठोस उदाहरण देकर उसे अपने नियमों के अनुसार जीने के लिए विवश करता है वह चाहकर भी आवाज नहीं उठा पाती हैं और वह पुरुष के दुर्ग में घिरी, घूटी ऐसे ही जीवन व्यतीत करती हैं। एक दृष्टांत देखिए – 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में कविता हरतालिका के व्रत में विश्वास नहीं करती है। तो संदीप कविता से कहता है – ''तुम इतनी परंपरा शून्य

[2] ममता कालिया : सीट नंबर 6 (बातचीत बेकार है), पृष्ठ संख्या 65

क्यों हो ? हिंदुस्तान की सारी औरत आज पति की खातिर निर्जल निंन्न पड़ी है और तुम प्रेत की तरह मेरे पीछे लग गई।''[3]

सीमोन द बोउवार ने 'सेकंड सेक्स' पुस्तक लिखकर इस विचारधारा को क्रांति का नया रूप दिया। उसका मानना था कि धर्म और सामाजिक रूढ़ियों ने नारी को समाज में दोयम दर्जा दिया है। जिसके पीछे पुरुष वर्चस्व की सामंती ठसक दिखाई दे रही है। नारी को अपने अधिकार पाने के लिए इन धार्मिक, सामाजिक, रूढ़ियों से मुक्ति पाने के लिए अभी लंबी लड़ाई लड़नी है। 'दुक्खम सुक्खम' उपन्यास में लेखिका ने विद्यावति के माध्यम से यह स्पष्ट किया है – ''सीमित शिक्षा के बावजूद उसमें सहज व्यवहारिक ज्ञान था कि स्त्री के लिए घर परिवार एक किस्म का आजीवन कारावास होता है।''[4] आगे विद्यावती कहती है – ''मोय नाय मिलौ गांधी बाबा नहीं मैं पूछती च्यों जी तुमने सिर्फ आदमियों को आजादी दिला दी, लुगाइयों को कब आजाद करोगे वह तो आज भी गुलाम हैं।'' लल्ला नत्थीमल ने कहा, ''क्या गुलामी कर रही हो, ज़रा मैं भी सुनूँ। घर का काम बहू करै, दुकान में संभारूँ तोपे कौन–सी जिम्मेदारी है ?'' ''अभाल की नहीं मैं तो पिछले सालों की बात करूँ। इत्ती जिंदगानी दुःक्खम सुःक्खम कट गई, अपनी राजी से कछु नायॅ कियै''। लाला नत्थीमल कहते हैं – ''क्या करना चाहती रही तू। कुनबे की चौधराहट तूने संभारी देसी घी के चूरमा, परांठे खाए, देखबे बारी न कोई सास न ननंद और कसर रह गई ?'' ''तुमने बस इत्ता ही जाना। अरे औरत रोटी और पाटी के ऊपर भी कछु चाहै की नायॅ। मर्द की गुलामी से अच्छी तो मौत होवे।''[5]

'फर्क नहीं' कहानी इस तथ्य को सामने लाती है कि लड़की को परिवार में बंदिशो का सामना करना पड़ता है। ''वह मेरे योवन का शिखर था। इसका पता मुझे अपनी अंदरुनी कार्यवाही से उतना नहीं चला था, जितना की बाहर रद्दोबदल से। कॉलेज से लौट कर एक दिन मैंने पाया मेरे कमरे की खिड़की पर नीला पर्दा लटक रहा है। इसके साथ ही हदबंदी शुरू हो गई थी। रातों–रात घर में मेरे लिए प्रतिरक्षा कानून बनाकर जारी कर दिए गए थे।''[6]

' ममता कालिया की 'राजू' कहानी में विधवा बेटी परिवार में इसलिए उपेक्षित होती है, क्योंकि वह गरीब और विधवा नारी है। भाई की शादी पर जाने पर बहन व अन्य रिश्तेदारों द्वारा विभिन्न प्रकार की बातें करके उसे और उसके बेटे को अपशकुनी कहकर अपमानित किया जाता है। 'बेघर' में पात्र परमजीत की माँ का वर्णन है कि बार–बार प्रसव से उसके शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ा है। एक नारी को अन्य दायित्वों के साथ–साथ मातृत्व का उत्तरदायित्व भी निभाना पड़ता है। परिवार की आर्थिक स्थिति डामाडोल होने से नारी का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। उसे मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना पड़ता है। भारतीय नारी अपने विकास और

3 ममता कालिया : एक पत्नी के नोट्स, पृष्ठ संख्या 31

4 ममता कालिया : दुक्खम सुक्खम, पृष्ठ संख्या 97

5 वही, पृष्ठ संख्या 175

6 ममता कालिया : ममता कालिया की कहानियां, खंड–1, पृष्ठ संख्या 120

अधिकारों के प्रति जागरुक नहीं है। अधिकांशतः उत्पत्ति का घरेलू कामकाज तक सीमित रहना अपना जीवन भोगने में ही अपनी सफलता मानती है। उसके परिवार में लड़कियों की शादी हमेशा एक तनावपूर्ण विषय थी और तीन चार साल छोटी बहन भी भाई से ज्यादा विवाह योग्य मानी जाती है। ''फिर मांये अपनी लड़कियों को ज्यादा सख्ती से रखती, वह अक्सर मांओ द्वारा पैदा किए गए बच्चे को पालती रहती और घर का काम करती।''[7] भारतीय समाज में तो नारी की उपेक्षा सदा से बनी रही है। संयुक्त परिवार में उपेक्षा इतनी अधिक हो जाती है कि कुंवारी कन्याओं की कोई भी चिंता नहीं करता।

ममता कालिया का विचार है कि हमारे समाज में पारिवारिक परिवेश की संरचना कुछ इस प्रकार की है कि उनमें नारी का अध्ययन और शिक्षा आदि के लिए हतोत्साहित तो किया जाता है, लेकिन उसके साथ ही नारी पर काम का दबाव भी अधिक पड़ता है और इसलिए उनकी शिक्षा अधूरी रह जाती है। वह अपनी पढ़ाई तो जारी नहीं रख पाती 'बेघर' उपन्यास में परमजीत की बहन घरेलू कामकाज की अधिकता के कारण मैं अपनी व्यक्तिगत सफाई का ध्यान नहीं रख पाती। ऐसे में वह शारीरिक रूप से पीड़ित नजर आती है। अतः ''उसका सिर जुओं से भरा रहता है और उसके हाथ से हर समय मसालों की गंध आती है। माँ मातृत्व का बोझ झेलती है और वह बच्चों के पालन–पोषण में माँ का हाथ बटाती है। यही कारण है कि उसका स्कूल जाना अकसर किसी कारणवश रुक जाता है।''[8] 'बातचीत बेकार है' कहानी में लेखिका ने एक ऐसी पत्नी को प्रस्तुत किया है जो अपनी यंत्रवत जिंदगी से ऊब गई है। उसका पति नौकरी के लिए चला जाता है और वह घर में अकेली रहती है। पुरुषों के अहमभाव और स्त्री को समझाने की उसकी प्रवृति को लेखिका ने इस कहानी में दिखाया है। इस वजह से नारी का जीवन सिर्फ रसोईघर और प्रसूति ग्रह तक ही सीमित होकर रह जाता है, साथ ही उसके बच्चे भी उसे ज्यादा परेशान कर देते हैं। वह नाम मात्र की गृहस्वामिनी बनकर रह जाती है। यहाँ तक की कुछ वर्षों बाद उन्हें लगता है कि पति–पत्नी के बीच की बातचीत बेकार है, वह किसी काम का नहीं है। ममता कालिया की 'तोहमत' कहानी आज के समाज की विकृत मानसिकता का परिचय देती है कि एक लड़की की अगर कपड़े फटे हो अर्थात सामान्य व्यवस्था में न हो तो समाज परिवार सभी उस पर शक की दृष्टि बनाए रखते हैं। इस तरह जुर्म करने वाला भी समाज और उस पर उंगली उठाने वाला भी समाज होता है।

यही बात इस कहानी में दर्शाई है कि सुधा और आशा दो सहेलियों एक साथ रहती है। ये दोनों एक दिन घूमने जाती हैं, लेकिन वही यह अपना रास्ता भूल जाती है और जंगल में फंस जाती है। वहाँ यह दोनों सहेलियां एक साधु को असामान्य अवस्था में देखकर, डर के मारे भागती हुई कटीले रास्तों से आते हुए अपने घर पहुंचती है और कटिलों रास्तों से आते हुए उनके कपड़े फट जाते हैं। जब उनके परिवार वाले उन्हें ऐसे ही हालत में देखते हैं तो घर में सभी लोग शंकित दिखाई देते हैं। आशा की माँ बुरा–भला कहती है, ''हाय

7 ममता कालिया : बेघर पृष्ठ संख्या 84–86

8 ममता कालिया : बेघर, पृष्ठ संख्या 10

हाय यह तुझे क्या हो गया ?'' सुधा ने हांफते हुए कहा, ''कुछ नहीं चाची जी हम ज्यादा दूर निकल गई थी बातों बातों में।'' ''उन लोगों को पता चलेगा तो क्या सोचेंगे। रख दी न इज्जत धूल में मिलाकर''। सुधा डर आतंक और आंखों से कांपने लगी, चाचा जी आपकी इज्जत कोई धूल में नहीं मिली है हमारे साथ कुछ भी नहीं हुआ है।'' ''हम किसी को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहे।'' आशा – पर अम्मा, कुछ हुआ भी तो हो, माँ कहती है – अब और क्या होने को बाकी है। हमारा मुँह काला करा दिया, अपना मुँह काला करा लिया, जन्मी की औलाद।''[9] लड़कियों के बारे में तो लोगों की धारणा पहले ही ठीक नहीं होती और फिर बाद में उसकी जरा सी गलती पर लोग उस पर तोहमत लगाने को तैयार हो जाते हैं।

समाज में, परिवार में लड़की की और एक अलग दृष्टि से देखा जाता है, इस बात का वर्णन इस कहानी में किया गया है। स्त्री सदैव घर की चारदीवारी के भीतर व बाहर हमेशा हिंसा का शिकार होती हुई अपना जीवन व्यतीत करती है। इसके विरुद्ध यदि वह अपनी आवाज भी उठाने की कोशिश करती है तो समाज द्वारा उसे कुलटा, चरित्रहीन आदि संज्ञाए देखकर बहिष्कृत कर दिया जाता है। एक नारी शारीरिक हिंसा के साथ–साथ मानसिक हिंसा और यौन–शोषण का भी शिकार होती रही है। समाज द्वारा उसे अनेक उत्पीड़नाएं दी जाती हैं। 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में कविता बात–बात पर मानसिक हिंसा का शिकार होती हुई दिखाई देती है। संदीप ने उसे प्रेम विवाह किया था। परंतु कुछ समय के बाद वह अपनी पत्नी कविता पर लांछन लगाता है कि उसके संबंध घर के नौकर के साथ हैं। इस प्रकार की बातों से कविता मानसिक रूप से पीड़ित रहने लगती है। वस्तुतः संदीप अपनी पत्नी कविता पर अपना अधिकार भाव रखता है, परंतु कविता समान अस्तित्व की माँग करती है, जो वह कदापि स्वीकार नहीं करता और अपनी बौद्धिकता के दम पर उसे परेशान करने में उसे मज़ा आने लगता है। 'दर्पण' कहानी प्रमुख पात्र (बानी) परिवार में अपनी दोयम दर्जे की स्थिति का उल्लेख किस प्रकार करती है, ''माँ ने संयम और अनुशासन के उपदेश देकर उसका जीना जंजाल बना रखा था। घर में मस्ती, सुस्ती के लिए कोई स्थान नहीं था। सारे नियम बानी के लिए ही थे – सुबह देर तक मत सोओ, रात देर तक मत जागो, शाम से पहले घर पहुंचो, अनजान आदमी से बात न करो। दादा इन नियमों से मुक्त थे। बानी, माँ का डर और सतर्कता समझती थी। इसलिए आश्वस्त न होते हुए भी इन नियमों के भीतर रहती है।''[10]

सारांशः उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि स्वस्थ एवं सुःखी परिवार के सृजन में नारी–पुरुष दोनों का सहयोग आवश्यक है, क्योंकि परिवार और समाज की निर्मित व्याप्ति में और संपूर्णता में नारी–पुरुष का योगदान अपरिहार्य है। इसलिए स्त्री को परिवार और समाज में दोयम दर्जा न देकर बल्कि सहयोग व समानता का दर्जा देना उचित है। तभी हम भावी समाज की कल्पना कर सकते हैं। स्वतंत्रता आज की नारी की चिंता का प्रमुख विषय है। स्वतंत्रता का मूल अर्थ संभव है, अपने निर्णय स्वयं लेने के अधिकार से है और तभी वह सुरक्षित हो सकती

9 ममता कालिया : प्रतिदिन (ममता कालिया की कहानियां) खंड–1, पृष्ठ संख्या 278–279

10 ममता कालिया : उसका यौवन, पृष्ठ संख्या 121

है, जब अपने बारे में वह निर्णय लें और इस निर्णय के लिए उसे बहुत से पूर्वाग्रहों एवं पारंपरिक परिपाटियों को लांघना होगा। ममता कालिया ने अपने साहित्य जगत में नारी को एक व्यक्तित्व दिया। जिसमें उसे अपने निर्णय स्वयं लेने हैं। मानव मूल्यों का आधार भी व्यक्ति विशेष की इच्छा, अनुमान निर्णय बोध क्षमता तथा संवेदना ही है। लेखिका नारी स्वतंत्रता के संदर्भ में घर की कल्पना एक ऐसे घर से करती है, जिसमें पति–पत्नी की समान साझेदारी हो दोनों एक दूसरे को महत्व दें तथा आत्मबोध उनको पति आश्रिता पत्नी से ऊपर उठाकर एवं महत्वाकांक्षी और स्वाभिमानी नारी बना देता है।

संदर्भ सूचीः

- डॉ० भारती शेल्के, साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार, पृष्ठ 14।
- ममता कालिया : सीट नंबर 6 (बातचीत बेकार है), पृष्ठ संख्या 65।
- ममता कालिया : एक पत्नी के नोट्स, पृष्ठ संख्या 31।
- ममता कालिया : दुक्खम सुक्खम, पृष्ठ संख्या 97।
- ममता कालिया : ममता कालिया की कहानियां, खंड–1, पृष्ठ संख्या 120।
- ममता कालिया : बेघर, पृष्ठ संख्या 84–86।
- ममता कालिया : बेघर, पृष्ठ संख्या 10।
- ममता कालिया : प्रतिदिन (ममता कालिया की कहानियां) खंड–1, पृष्ठ संख्या 278–79।
- ममता कालिया : उसका यौवन, पृष्ठ संख्या 121।